उपशास्त्री, राष्ट्रभाषा हिन्दी, अ० द्वि० – पत्र

दिगंत - भाग - 2, पद्य भाग

शीर्षक - पुत्र वियोग

कवयित्री - सुभद्राकुमारी चौहान

महत्वपूर्ण अवतरणों की सप्रसंग व्याख्या -

जिसके लिए भूल अपनापन
पत्थर को भी देव बनाया
कहीं नारियल, दूध बताशे
कहीं चढ़ाकर शीश नवाया।

प्रस्तुत व्याख्येय काव्यांश हमारी पाठ्य पुस्तक दिगंत- भाग-2 के 'पुत्र वियोग' शीर्षक कविता से ली गई है। इसकी रचयिता सुभद्रा कुमारी चौहान हैं। कवयित्री अपने वात्सल्य भाव से अभिभूत है। उसकी हार्दिक आकांक्षा अपने पुत्र को स्वस्थ तथा सुखी देखने की है।

कवयित्री कहती है कि उसने पत्थर की भी पूजा की है। पत्थर की प्रतिमा को देवता माना। मंदिरों में जाकर नारियल, दूध तथा बताशे चढ़ाए।

इन पंक्तियों में कवयित्री का कहने का आशय यह है कि अपने पुत्र के स्वास्थ्य तथा सुख के लिए उसने मंदिरों में जाकर पूजा- अर्चना की। पत्थर की मूर्तियों को भी भगवान मानकर उनसे मिन्नतें माँगी। मंदिरों में नारियल, दूध, बताशे चढ़ाकर पुत्र के दीर्घ जीवन की कामना की। वह सदैव अपने पुत्र को हँसते- खेलते देखना चाहती थी। उसकी प्रसन्नता में ही उसकी खुशी निहित थी।

डॉ० देव चरण प्रसाद
सहा० प्रो० हिन्दी 06/11/20
रा० कृ० सं० महावि० सुखसेना, पूर्णियाँ

शास्त्री प्रथम खण्ड, राष्ट्रभाषा हिन्दी, अ० द्वि०-पत्र

'निर्मला' उपन्यास

लेखक:- मुंशी प्रेमचन्द

प्र:- 'निर्मला' उपन्यास की समीक्षा इस प्रकार कीजिए कि उसकी समस्त विशेषताएँ स्पष्ट हो जाएँ।

उ:- उपन्यास सम्राट मुंशी प्रेमचन्द स्वयं कहा है कि 'निर्मला' उपन्यास दहेज और अनमेल विवाह की करुणा भरी सामाजिक कहानी है। असमय और अनायास निर्मला के पिता का दुखान्त अन्त हो जाने के कारण दहेज के लोभी भालचन्द्र जी अपने पुत्र का विवाह सम्बन्ध तोड़ देते हैं। और, वह विवशता की स्थिति में तीन पुत्रों के पिता बूढ़े वकील तोताराम से ब्याही जाती है। निराशा युवती निर्मला वृद्ध पति के प्रेम-स्वांगों से विरत हो जाती है। बूढ़े तोताराम की अन्धी काम-वासना अपने जेठ पुत्र मंसाराम और निर्मला के बीच अनुचित सम्बन्ध का सन्देह करते हैं। यह सन्देह ही समस्त परिवार को दावानल बनकर भस्म कर देता है। मंसाराम इस आघात से मृत्यु को प्राप्त हो जाता है। मँझला पुत्र जियाराम आभूषण चुराकर भागना चाहता है। भेद खुलने पर वह आत्म हत्या कर लेता है। सबसे छोटा पुत्र सियाराम विरक्त होकर साधु हो जाता है। पिता तोताराम उसकी खोज में निकल पड़ते हैं। इधर निर्मला अकेली रह जाती है। भुवनमोहन सिन्हा जिन्होंने कभी दहेज के खातिर निर्मला को ठुकरा दिया था, वे उसे अपने प्रेम जाल में फँसाना चाहते हैं। परन्तु असफल होने पर आत्म-हत्या कर लेते हैं। निर्मला भी घुलती हुई अन्त में मृत्यु को प्राप्त होती है। शेष आगे के कक्षा में-

डॉ० देव चरण प्रसाद
एसो० प्रो० हिन्दी 06/11/20
रा० कृ० सं० महावि० सुखसेना, पूर्णियाँ

जग में सचर अचर जितने हैं सारे कर्म-निरत हैं।
धुन है एक न एक सभी को सबसे निश्चित व्रत है।

देश के सेवक को निष्ठा और ईमानदारी से अपने धर्म का पालन करना चाहिए। उसका हृदय मक्खन के समान कोमल होना चाहिए। उसमें नैतिक गुणों का भण्डार होना चाहिए।

डॉ० देव चरण प्रसाद
एसो० प्रो० हिन्दी
रा०उ०सं० महावि० खुश्कीबाग, पूर्णियाँ

06/11/20

शास्त्री द्वितीय खण्ड, राष्ट्रभाषा हिन्दी, अ० द्वि०-पत्र

'पथिक' खण्ड काव्य

कवि – श्री राम नरेश त्रिपाठी

प्रश्न: क्या 'पथिक' में राष्ट्रीय भावना पर प्रकाश डाला गया है, सिद्ध करें।

उत्तर:- आधुनिक काल के प्रसिद्ध कवि श्री राम नरेश त्रिपाठीजी ने अपने खण्ड काव्य 'पथिक' में राष्ट्रीय भावना पर विस्तार से प्रकाश डाला है। त्रिपाठी जी का 'पथिक' सबसे पहले तो हमें इस बात का सन्देश देता है कि हमें सब कुछ खोकर भी अपनी मातृभूमि की आजादी हासिल करनी चाहिए। इसके साथ ही इसने एक महत्वपूर्ण बात यह भी कहा है कि देश-प्रेम विश्व-प्रेम में व्यवधान उपस्थित न करे। इसका अभिप्राय यह है कि स्वयं भी शान्ति पूर्वक रहकर अपने राष्ट्र को गौरवशाली बनायें और अन्य देशों को भी स्वतंत्रता पूर्वक रहने का अधिकार प्राप्त हो। यही हमारा आदर्श होना चाहिए। इस मार्ग पर चलकर ही हम विश्व को युद्ध की विभीषिका से सुरक्षित रखने में कामयाब होंगे।

कवि का ऐसा मानना है कि विश्व-प्रेम होने के पहले अपने देश का प्रेमी होना चाहिए। जब तक हम अपने घर को सुरक्षित एवं व्यवस्थित नहीं कर लेते तब तक हम दूसरों का सुधार नहीं कर सकते हैं। इसलिए देश के प्रत्येक नागरिक का यह कर्तव्य है कि वह देश का वीर प्रहरी और सिपाही हो। इसके लिए हमें परिश्रमी, कार्यशील और चरित्रवान होना होगा। देश में रहने वाले अब अकर्मण्य पुरुषों की कोई आवश्यकता नहीं है। जो जंगल में मंगल करना चाहते हैं उनसे उम्मीद करना निरर्थक होगा। पलायनवादी मनोवृत्ति से देश का हित होने वाला नहीं है।

इस खण्ड काव्य का प्रमुख पात्र मुनि ने पथिक को इसी कर्मवाद का पाठ पढ़ाया है और बतलाया है कि सृष्टि का कोई भी प्राणी बैठकर नहीं खाता है। जड़ और चेतन सृष्टि के सभी प्राणी कुछ न कुछ काम करते हैं। मुनि कहते हैं –

शेष आगे –